षट्कर्म-विधान

(SHATKARM-VIDHAN)

(श्री बगलामुखी के विशिष्ट प्रयोगों सहित)

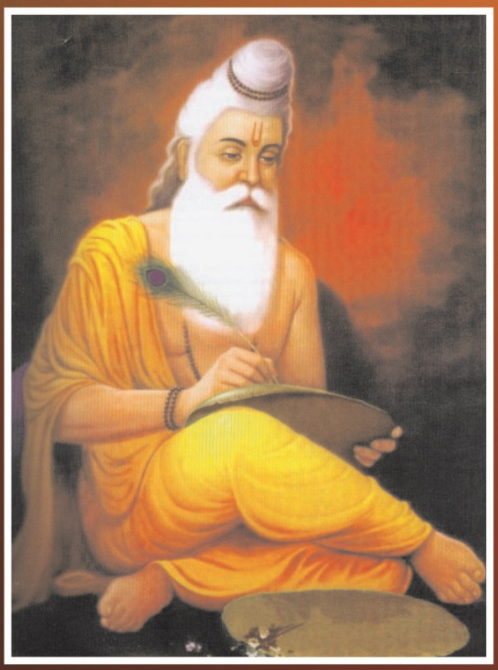

लेखक एवं सङ्कलयिता

योगेश्वरानंद एवं सुमित गिरधरवाल

षट्कर्म-विधान

(SHATKARM-VIDHAN)

(श्री बगलामुखी के विशिष्ट प्रयोगों सहित)

लेखक एवं संकलयिता

योगेश्वरानंद एवं सुमित गिरधरवाल

प्रकाशक

आस्था प्रकाशन मन्दिर

बागपत

"षट्कर्म-विधान"

योगेश्वरानन्द एवं सुमित गिरधरवाल

चेतावनी–

श्री वृद्धि और सुख-शान्ति के लिए मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र साधनाओं का विशेष महत्व है। परन्तु यदि किसी साधक को इस पुस्तक में दी गयी साधना के प्रयोग में विधिगत, वस्तुगत अशुद्धता अथवा त्रुटि के कारण किसी भी प्रकार की क्लेशजनक हानि होती है, अथवा कोई अनिष्ट होता है तो इसका उत्तरदायित्व स्वयं उसीका होगा। लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक उसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। अतः कोई भी प्रयोग योग्य व्यक्ति के सानिध्य में ही करें।

© : लेखक

ISBN : 978-93-82171-66-9

मूल्य : ` 280/- रुपये

प्रथम संस्करण : 2016

शब्द-संयोजक
अतुल ग्राफिक्स, ट्रॉनिका सिटी, गाजियाबाद (उ०प्र०)

प्रकाशक : आस्था प्रकाशन मन्दिर
'हेमकुंज' कोर्ट रोड, गली नं. 6, भजन विहार कॉलोनी,
बागपत-250609, (उ.प्र.)
मोबाइल : 9410030994, 9540674788
Website : www.asthaprakashan.com
E-mail : ashthaprakashanmandir@gmail.com

मुद्रक : अवतार ऑफसेट

षट्कर्म हेतु विशिष्ट प्रयोग

- गणपति-प्रयोग
- हनुमत्-प्रयोग
- बगलामुखी-प्रयोग
- धनदा यक्षिणी-प्रयोग
- प्रत्यंगिरा-प्रयोग
- शीघ्र विवाह अघोरी प्रयोग
- सौन्दर्यलहरी के तान्त्रिक प्रयोग
- दुर्गा-तन्त्र-प्रयोग
- पीताम्बरा पंचास्त्र-प्रयोग
- धूमावती-तन्त्र-प्रयोग
- कालरात्री-प्रयोग
- भैरव-प्रयोग
- नवार्ण मन्त्र-प्रयोग
- शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषण एवं मारण हेतु मिश्र प्रयोग
- विश्वावसु गंधर्वराज-प्रयोग

॥ श्रीयन्त्रम् ॥

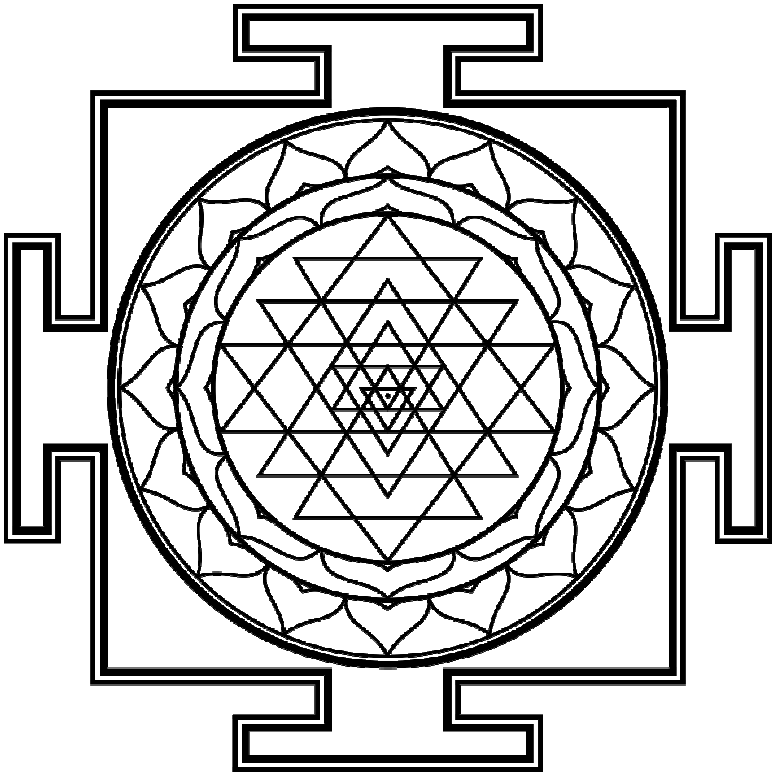

'चतुरस्रं त्रिवृत्तञ्च पत्रषोडशकं तथा।
अष्टदलञ्च मन्वस्रं दशारञ्च दशारकम्॥१॥
अष्टारकं त्रिकोणञ्च बैन्दवं चार्चयेत्क्रमात्।
एतच्चक्रात्मकं यन्त्रं श्रीतारायाः प्रकीर्त्तितम्॥२॥'

दो शब्द

जब ऋण, शत्रु, रोग, मुकदमा आदि को निष्प्रभावी करने के सभी उपाय असफल हो जाते हैं, व्यक्ति स्वयं को पराक्रमहीन महसूस करने लगता है; भौतिक संसाधन एवं पुरुषार्थ की सभी सीमायें समाप्त हो जाती हैं, ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य के समक्ष एक ही विकल्प शेष रह जाता है, वो है परमात्मा की शरण। विभिन्न देवी-देवताओं की शरण। ऐसी स्थिति में वह तन्त्रों-मन्त्रों का आश्रय लेता है, जिसके लिए वह भिन्न-भिन्न योग्य आचार्यों का सहारा लेता है। ऐसी अवस्था में विद्वजन यजमान के कष्टों के निवारण हेतु षट्कर्मों का प्रयोग करते हैं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र के द्वारा षट्कर्मों का सम्पादन करने की रुचि प्रायः सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों में होती है। ये षट्कर्म– शांति, वशीकरण, स्तंभन, उच्चाटन, विद्वेषण एवं मारण के नाम से जाने जाते हैं। किसी भी यजमान अथवा कुयोग से प्रभावित व्यक्ति को लाभ पहुंचाने के लिए साधक को इन्हीं षट्कर्मों से सम्बन्धित प्रयोगों का आश्रय ग्रहण करना पड़ता है।

यह एक सर्वविदित और कठोर सत्य है कि अधिकांश साधक अपनी इच्छापूर्ति अथवा यजमान की कामना के अनुसार फल-प्राप्ति के लिए ही अनुष्ठान-विधान करते हैं। ऐसे साधक बहुत ही कम संख्या में हैं जो निष्काम भाव से साधना करते हों। यद्यपि कुछ साधक ऐसे भी हैं जो मोक्ष-प्राप्ति के लिए साधना करते हैं। लेकिन यह कर्म भी वासनापरक है। परंतु चूंकि इस साधना का उद्देश्य किसी को हानि पहुंचाना नहीं है अतः यह निकृष्ट कर्म नहीं है, लेकिन है काम्य कर्म ही।

आज प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति किसी न किसी समस्या से त्रस्त हैं। उनकी समस्याओं के समाधान हेतु साधक को ऐसे प्रयोगों की आवश्यकता होती है, जो उनकी समस्याओं का त्वरित निदान कर सकें। ऐसी ही आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए षट्कर्मों का सम्पादन करना आवश्यक हो जाता है। बस इन्हीं आवश्यकताओं की परिपूर्ति के लिए इस ग्रंथ की रचना की गयी है।

यद्यपि मेरे गुरुदेव श्री योगेश्वरानन्द जी द्वारा इस ग्रंथ की रचना कई वर्षों पूर्व कर दी गयी थी, किंतु अपरिहार्य कारणों से इसका सम्पादन एवं प्रकाशन संभव नहीं हो सका। अंततः मां पीताम्बरा की असीम अनुकम्पा हुई और मैंने स्वयं ही इस ग्रंथ का सम्पादन एवं प्रकाशन का भार अपने कंधे पर लिया, ऐसे में मां पीताम्बरा की अनुकम्पा से 'श्री अनिल सिंह राठौर' जी से भी सम्पर्क हुआ, जो अत्यन्त

धर्मनिष्ठ और प्रकाशन के क्षेत्र में एक अनुभवी एवं सुयोग्य व्यक्ति हैं। उनका सानिध्य एवं सहयोग मिला तो इस ग्रंथ के प्रकाशन का भार सहज ही स्वीकार कर लिया और परिणामतः यह आपके गरिमामय हाथों में उपलब्ध है। इस ग्रंथ की एक उपलब्धि यह भी रही कि इसी के साथ ही 'आस्था प्रकाशन मन्दिर, बागपत' प्रतिष्ठान की नींव भी पड़ गयी।

यदि मां बगला की अनुकम्पा रही तो वर्षों से प्रतिक्षित ''श्री बगलामुखी-साधना-रहस्य'', "द्वितीय महाविद्या श्री तारा-साधना और सिद्धि'', ''आगम-रहस्य'', ''अघोरी'' और ''यन्त्र-साधना'' जैसे उत्कृष्ट ग्रंथ भी अति शीघ्र ही 'आस्था प्रकाशन मन्दिर, बागपत' के माध्यम से आपके हाथों में होंगे। आपके आशीर्वाद एवं शुभ कामनाओं की प्रतिक्षा मुझे सदैव रहेगी।

आपका अपना...

सुमित गिरधरवाल

Phone : 9410030994, 9540674788
Email : sumitgirdharwal@yahoo.com
Website : www.baglamukhi.info

विषयानुक्रमणिका

विषय पृष्ठ संख्या

दो शब्द v–vi

अपनी बातें, अपनों से vii–xi

भूमिका xiii–xvi

1. षट्कर्म-विधान 1–14

स्तम्भन, मोहन, उच्चाटन, वश्याकर्षण, जृम्भण, विद्वेषण, मारण, शान्तिकरण, पौष्टिक, सांतनिक, षट्कर्मों के देवता, षट्कर्मों की दिशा, ऋतुकाल निर्णय, एक दिन में छहों ऋतुओं का समय, षट्कर्मों के वर्ण, षट्कर्मों के तिथि एवं दिन, तिथि-विचार, सिद्धि योग चक्रम, मृत्यु योग निर्णय, नक्षत्र विचार, लग्न विचार, योगिनी विचार, योगिनी चक्रम, तत्व-विचार, दिशाशूल विचार, हवन-विचार, आसन विचार, साधना-स्थल विचार, जप अंगुली विचार, समिधा-विचार, माला व दानों की संख्या का विचार, मन्त्र ग्रहण करने हेतु मास चिचार।

2. मन्त्र-सिद्धि रहस्य 15–32

भूत-शुद्धि, विशिष्ट ज्ञातव्य तथ्य, तन्त्र प्रयोगों में स्मरणीय तथ्य।

3. मन्त्र-योग 33–54

मन्त्र की आवश्यकता, मन्त्रों की तीन जातियां, मन्त्रों की संज्ञा, विविध अवस्थाओं में सिद्धिदायक मन्त्र, मन्त्रों के दोष, मन्त्र-संस्कार, विन्यास, संक्षिप्त पुरश्चरण विधि, अग्नि आह्वान, अग्नि-विधान, लेखन, लेखनी एवं द्रव्य-विचार, आहार, तर्पण-द्रव्य, पात्र-विधान, तर्पण-स्थिति, न्यास-विधान, स्थान-निर्णय, पीठिकाएं, मन्त्रों में ध्वनि प्रयोग, सिद्धि-असिद्धि-विचार, राशि चक्र-विचार, चक्र-विचार, सिद्धादि शोधन, मन्त्र शोधन के अपवाद, अरिमन्त्र का त्याग, कलिकाल में सद्य सिद्धिदायक मन्त्र।

4. माला-संस्कार 55–58

सद्योजात मन्त्र।

5. शाबर-सिद्धि-विधान 59–62

शाबर-सिद्धि और समय, साधना में आवश्यक सामग्री, सर्वार्थ साधन मन्त्र, शरीर रक्षा मन्त्र, शाबर सिद्धि के अन्य प्रयोग, रक्षा हेतु अन्य मन्त्र।

6. यज्ञ एवं कुण्ड 63–68

यज्ञ के दो भेद, कुण्ड निर्माण में आवश्यक विधान, भूमि विचार, नाभि एवं मेखला विचार, कण्ठ-विचार, मण्डप आच्छादन विचार, प्रधान कुण्ड विचार, परिमाण एवं निर्माण विचार, अन्य विचार, वर्णानुसार कुण्ड विचार, मेखला विचार, कुण्ड-परिमाण विचार, कुण्ड निर्माण में माप।

प्रयोग-विभाग

7. शान्ति-कर्म 69–100

गणपति मन्त्र, षडक्षर वक्रतुण्ड मन्त्र, लक्ष्मी प्राप्ति और वाक् सिद्धि हेतु शाबर मन्त्र, पशुओं द्वारा अचानक दूध देना बन्द हो जाये, सर्व-शान्ति-प्रयोग, सफलता-प्राप्ति मन्त्र, सर्व-कार्य सिद्धि गणपति मन्त्र, धन-प्राप्ति हेतु जैन शाबर मन्त्र, सर्व-रोग-नाशक शाबर मन्त्र 1, 2, 3, सर्व-कार्य सिद्धि हेतु बंगाली शाबर मन्त्र, थनैला रोग निवारण मन्त्र, कन्या के शीघ्र विवाह हेतु प्रयोग, रामभक्त हनुमान द्वारा संकट निवारण, कारागार से छूटने का मन्त्र : विनियोग, करन्यास, हृदयादिन्यास, माला-मन्त्र, शत्रुंजय हनुमत्स्तोत्र, बगलामुखी द्वारा आर्थिक समृद्धि एवं विजय प्राप्ति : ध्यान, मृत्युंजय मन्त्र, बगला गायत्री, शत्रु-बाधा, राजकीय-बाधा, प्रेतोपद्रव के कारण व्यवसाय बन्द होने पर मन्त्र, भक्त मंदार मन्त्र, धनदा यक्षिणी प्रयोग, अभिचार-निग्रह, विपरीत प्रत्यंगिरा-प्रयोग : ध्यान, विनियोग, करन्यास, माला-मन्त्र, स्तोत्र, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, श्री काली प्रत्यंगिरा, सर्व-कष्ट निवारक मन्त्र, घर कीलना, शीघ्र विवाह हेतु अघोर गौरी मन्त्र-1 व 2।

8. वशीकरण-प्रयोग 101–128

वशीकरण मन्त्र-1, 2, 3 प्रयोग विधि सहित, आकर्षण, शाबर मन्त्र-4, 5, 6, 7, 8, पंजाबी शाबर मन्त्र, सौन्दर्य लहरी के तान्त्रिक

प्रयोग : वशीकरण, वशीकरण एवं कवित्व शक्ति : विनियोग, करांगन्यास, ऋष्यादिन्यास, शापोद्धार, मन्त्र, सिद्धि-विधि, मानसोपचार-पूजन, सर्व-वशीकरण प्रयोग, प्रयोग-विधि, यन्त्र, विनियोग, करांगन्यास, हृदयादिन्यास, ऋष्यादिन्यास, जप-मन्त्र, विधि, स्त्री-वशीकरण, प्रयोग-विधि, विनियोग, ध्यान, विधि, दुर्गा-तन्त्र : लवण दुर्गा-मन्त्र, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास, करन्यास, अक्षरन्यास, ध्यान (वशीकरण, शत्रुनाश, मारण), पूजन यन्त्र, प्रयोग-विधि, आसुरी दुर्गा-प्रयोग : प्रयोग-विधान, मन्त्र, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिषडंगन्यास, अथर्वापुत्री आसुरी दुर्गा का ध्यान।

9.स्तम्भन-कर्म 129–140

गर्भ-स्तम्भन : मन्त्र, साधना एवं प्रयोग-विधि, स्वयं सिद्ध प्रयोग, सर्प एवं विष स्तम्भन : मन्त्र, सिद्धि एवं प्रयोग-विधि, बुद्धि स्तम्भन

प्रयोग : सिद्धि एवं प्रयोग विधि, प्रबल स्तम्भन प्रयोग, विमर्श, स्तम्भनकारक गौड़ीय शाबर मन्त्र : प्रयोग विधि, स्तम्भनकारक केरलीय शाबर मन्त्र : प्रयोग विधि, सर्वजन-मुख स्तम्भन मन्त्र : साधना-विधि, त्रैलोक्य स्तम्भन मन्त्र : साधना-विधि, वाणी-स्तम्भन मन्त्र, स्तम्भन के उच्चप्रयोग : पीताम्बरा पंचास्त्र मन्त्रा– मूल मन्त्र, (1) वडवामुखी मन्त्र, ध्यान (2) उल्कामुखी मन्त्र : विनियोग, ध्यान (3) जातवेदमुखी : विनियोग, ध्यान (4) ज्वालामुखी : विनियोग, ध्यान (5) वृहद्भानुमुखी : मन्त्र, विनियोग, ध्यान।

10. विद्वेषण-कर्म 141–176

विद्वेषण हेतु शाबर मन्त्र (1) : मन्त्र, प्रयोग-विधि, प्रयोग (2) : मन्त्र, प्रयोग-विधि; विद्वेषण वाराही मन्त्र : मन्त्र, प्रयोग-विधि; गुर्जर कालरात्रि शाबर मन्त्र : मन्त्र, प्रयोग-विधि; धूमावती प्रयोग : मन्त्र, प्रयोग-विधि; अन्य विद्वेषण शाबर मन्त्र : मन्त्र, प्रयोग-विधि; महाभैरव मन्त्र : प्रयोग-विधि, मन्त्र-2, आंचलिक शाबर मन्त्र : विद्वेषण प्रयोग, मन्त्र, प्रयोग-विधि, निवारण; प्रयोग-2 : मन्त्र, प्रयोग-विधि; प्रयोग-3 : मन्त्र, प्रयोग-विधि; प्रयोग-4; 5, 6 मन्त्र एवं प्रयोग-विधि; विद्वेषण हेतु उच्च प्रयोग : कृत्या-निवारण सूक्त,

प्रत्यंगिरा-यन्त्रार्चन, कवच, स्तोत्र, मन्त्र, ध्यान, विनियोग, करन्यास, हृदयादिन्यास, लघु स्तोत्र (माला-मन्त्र), अन्य मन्त्र, स्तोत्र, विनियोग; प्रत्यंगिरा मन्त्र एवं प्रयोग-1, 2 व 3, विनियोग, षडंगन्यास, विनियोग, ध्यान, षट्विंशत्यक्षर मन्त्र : विनियोग, षडंगन्यास; अष्टविंशत्यक्षर मन्त्र : विनियोग, षडंगन्यास, दिग्बन्ध, ध्यान : चतुस्त्रिंशदक्षर मन्त्र, सप्तत्रिंशदक्षर : विनियोग, षडंगन्यास, पदन्यास, ध्यान, साधना-विधि, बलिमन्त्र, लोम-विलाम गायत्री पुटित-मन्त्र, ध्यान; माला-मन्त्र, विनियोग, ध्यान; अन्य सिद्ध मन्त्रा : शत्रु-निग्रह, विद्वेषण मन्त्र, शत्रु-पलायन, प्रयोग-विधि।

(3) जातवेदमुखी : विनियोग, ध्यान (4) ज्वालामुखी : विनियोग, ध्यान (5) वृहद्भानुमुखी : मन्त्र, विनियोग, ध्यान।

11. उच्चाटन-कर्म 177–192

मन्त्र, प्रयोग-विधि; मन्त्र– 1, 2, 3 व 4, कालिका-उच्चाटन-प्रयोग :

ध्यान, विधान; अन्य उच्चाटन-प्रयोग– 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12 सप्रयोग विधि; विभिन्न प्रान्तीय उच्चाटन शाबर मन्त्र : 1, 2, 3 व 4 सप्रयोग-विधि।

12. धूमावती तन्त्र 193–204

सप्ताक्षरी मन्त्र, ध्यान, विनियोग, षडंगन्यास, अष्टाक्षर मन्त्र : विनियोग, ऋषयादिन्यास, षडंगन्यास, करन्यास, दशाक्षर, चतुर्दशाक्षर, पंचदशाक्षर मन्त्र (न्यास एवं विनियोग सहित), धूमावती-गायत्री; अष्टाक्षर मन्त्र-प्रयोग : ध्यान एवं न्यास सहित, आवरण-पूजा, प्रयोग-विधि, अघोर रुद्र, अस्त्र-वाराही, धूमावती-कवच।

13. कालरात्रि तन्त्र 205–218

मूल-ध्यान, काली क्रमोक्त ध्यान, षोडशी क्रमोक्त ध्यान, काली क्रमोक्त मन्त्र, षोडशी क्रमोक्त मन्त्र (विनियोग व न्यास सहित), मन्त्र

महौदधोक्त-विधान : मन्त्र, विनियोग, न्यास, ध्यान, पूजन, आवरण-पूजा; काम्य-प्रयोग साधन : आकर्षण, वशीकरण, मोहन-प्रयोग, दशाक्षरी मन्त्र, यन्त्र।

14. शत्रु-संहार-प्रयोग 219–230

गोरखनाथकृत काल भैरव-बटुक भैरव प्रयोग, भैरव शाबर मन्त्र-प्रयोग; सर्वसिद्धि भैरव शाबर मन्त्र; शत्रु-नाशक प्रयोग; बंगालिया भैरव-प्रयोग; शत्रु को डंडा मारना; मन्त्र– 1 व 2 सप्रयोग-विधि।

15. मिश्र-प्रयोग 231–242

नवार्ण-मन्त्र; साधना-विधि, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास, करन्यास, ध्यान, आकर्षण, सम्मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन व मारण-मन्त्र, जप संख्या-निर्णय, मोहन-कर्म, धूप-मन्त्र; वशीकरण प्रयोग; स्तम्भन-प्रयोग।

16. जैन धर्म के कुछ प्रभावशाली मन्त्र 243–252

वशीकरण हेतु मन्त्र; अग्नि-शान्ति; ज्वर-शान्ति; नारी-आकर्षण; संतान और सम्पत्ति-प्राप्ति; विवाह हेतु गंधर्वराज प्रयोग; साधना-विधान : न्यास, ध्यान, दिग्बन्धन, पीठशक्ति-न्यास, ध्यान, मानस-पूजा, मुद्राएं, विश्वावसु गायत्री, मूल मन्त्र, माला-मन्त्र।

षट्कर्म-विधान

"शान्ति वश्य स्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटने ता।

मारणान्तानि शंसन्ति षट् कर्माणि मनीषिणः।।"

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान में ये छः कर्म : शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण बहुत ही प्रचलित शब्द हैं। इन छः कर्मों को ही षट्कर्मों के नाम से जाना जाता है और सत्यता यह है कि "तान्त्रिक" जन-सामान्य में इन्हीं षट्कर्मों के कारण ही बदनाम हैं। आम जन-जीवन में ये षट्कर्म आतंक का कारण बने हुए हैं। किसी तान्त्रिक, मान्त्रिक और अघोरी जैसे व्यक्ति को देखते ही सामान्य व्यक्ति भयभीत हो जाता है। वस्तुतः ये छहों 'काम्य-प्रयोग' कहलाते हैं। मान्त्रिकों ने इन काम्य-प्रयोगों का वर्णन इस प्रकार किया है–

स्तम्भनं मोहमुच्चाटं वश्याकर्षणजृम्भणम्।

विद्वेषणं मारणं च शान्तिकं पौष्टिकं तथा।।

पूर्वोक्त छहों कर्मों से नौ प्रकार के प्रयोग किये जाते हैं जिनमें स्तम्भन, मोहन, उच्चाटन, वश्याकर्षण, जृम्भण, विद्वेषण, मारण, शान्तिकरण और पुष्टिकरण सम्मिलित हैं। कोई-कोई विद्वान 'सान्तनिक' प्रयोग को दसवां प्रयोग मानते हैं। इन कर्मों की स्पष्ट व्याख्या इस प्रकार है–

स्तम्भन : जिस मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र के करने से प्राणी, पशु, पक्षी, सर्प, शत्रुसेना (परचक्र) आदि की गति रोक दी जाये, किसी की वाणी अथवा कृत्य को जहां का तहां रोक दिया जाये, उसे स्तम्भन कहते हैं।

मोहन : जिस कर्म के द्वारा कोई व्यक्ति किसी को अपने वशीभूत कर ले, उस कर्म को मोहन कहते हैं। मोहन तीन प्रकार के होते हैं– राज मोहन, समूह अथवा सभा-मोहन और स्त्री-पुरुष मोहन। राज-मोहन में राजा, उच्चाधिकारी आदि को, सभा-मोहन में लोगों के एकत्र समूह को तथा स्त्री-पुरुष मोहन में किसी युवती अथवा महिला तथा पुरुष को अपने प्रति मोहित कर लिया जाता है।

उच्चाटन : जिस कर्म को करने से शत्रु रोगी हो जाता है, वह स्थान और पद से हटने का प्रयास करने लगता है उसे उच्चाटन कहते हैं। इस कर्म के प्रभाव से

साध्य व्यक्ति का मन अस्थिर हो जाता है; उसका क्रिया-कलाप निरुत्साही और उल्लास से हीन हो जाता है।

वश्याकर्षण : जिस प्रयोग को करने से प्राणी साधक की ओर स्वतः ही खिंचा चला आये; शत्रु का विपरीत मन भी साधक के अनुकूल हो जाये; तथा निर्जीव पदार्थ भी साधक के पास स्वयं चला आये, वह क्रिया 'वश्याकर्षण' कहलाती है।

जृम्भण : जिस कर्म के द्वारा साधक के शत्रु उससे भयभीत होने लगें और कांपने लगें उसे 'जृम्भण' कहते हैं।

विद्वेषण : जिस प्रयोग को करने से घनिष्ट मित्रों, देश, परिवार, जाति अथवा समाज में आपस में फूट और कलह होने लगे, उसे 'विद्वेषण' कहते हैं।

मारण : जिस प्रयोग के द्वारा किसी आततायी अन्यायी के प्राणों का हरण कर लें, उसे मारण-प्रयोग कहते हैं।

शान्तिकरण : जिस प्रयोग के द्वारा महामारी, शत्रुभय, राजभय, परचक्र का छेदन, रोग-नाश तथा संकटों का शमन हो जाये, उसे शान्तिकरण कहते हैं।

पौष्टिक : जिस कर्म के करने से देव-दर्शन, सुख-शान्ति तथा ऐश्वर्य में वृद्धि हो, उसे पौष्टिक कर्म कहते हैं। इस कर्म के द्वारा शुभता में वृद्धि तथा समस्त कामनाओं की सिद्धि होती है।

सान्तानिक : जिस प्रयोग को करने से पुत्र-हीना को पुत्र, बन्ध्या को सन्तान प्राप्ति तथा मृतवत्सा को दीर्घायु सन्तान की प्राप्ति हो उसे सान्तानिक प्रयोग कहा जाता है।

इन साधनों में मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, जृम्भण तथा मारण निकृष्ट तथा तामसी प्रयोग माने जाते हैं, अतः इन कर्मों को निषिद्ध किया गया है। एक उत्तम साधक को ऐसे प्रयोग सम्पन्न नहीं करने चाहिए अन्यथा उसकी शुभता का ह्रास होता है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जो साधक इन काम्य कर्मों का प्रयोग करता है, मन्त्र उसका शत्रु बन जाता है। इसलिए आवश्यक है कि विधिवत् न्यास एवं कवच आदि करने के बाद ही काम्य कर्मों का अनुष्ठान साधक को करना चाहिए। सदैव स्मरण रखे कि निष्काम भाव से जो व्यक्ति इष्ट का चिन्तन मनन और मन्त्र-जप करता है, उसे समस्त सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं, जबकि जो सकाम भाव से साधना करता है, उस केवल कामना-सिद्धि की ही प्राप्ति होती है। इसलिए साधक को सदैव काम्य-कर्मों से बचना चाहिए।

षट्कर्म-विधान

योगेश्वरानंद एवं सुमित गिरधरवाल

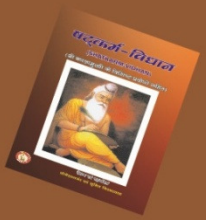

'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र' के द्वारा षट्कर्मों का सम्पादन करने की रुचि प्रायः सभी धर्मों में, सम्प्रदायों में दृष्टिगत होती है। कहीं-कहीं छः कर्मों के कुछ अधिक विभाग भी कर दिये गये हैं। परंतु मुख्यतः छः कर्म ही अधिक देखने में आते हैं। ये षट्कर्म–शान्ति, वशीकरण (मोहन व आकर्षण), स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषण एवं मारण के नाम से ज्ञात होते हैं। कल्याणकारी, मंगल प्रदायक, शरीर व मन के रोगों की शान्ति, क्लेशों की शान्ति, ग्रह-बाधाओं के कुप्रभावों की शान्ति, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्ति, दरिद्रता-निवारण आदि का कार्य 'शान्ति-कर्म' के अंतर्गत आता है। किसी को उद्देश्यपूर्वक मोहित कर लेना 'मोहन'; किसी को अपने अनुकूल बनाकर कार्य करा लेना 'आकर्षण' तथा किसी को कैसा भी शुभ-अशुभ कार्य करा लेने हेतु वशीभूत कर लेना 'वशीकरण' कर्म कहलाता है। किसी की वृत्तियों का निरोध कर देना, सजीव अथवा निर्जीव को जहां का तहां रोक देना आदि कर्मों को "स्तम्भन-कर्म" कहा जाता है। स्थान से नीचे गिरा देना, किसी के मन में शंका उत्पन्न कर भयभीत कर देना, भगा देना या स्थानांतरित कर देना 'उच्चाटन' कर्म कहलाता है। इस कर्म से प्रभावित साध्य व्यक्ति मारा-मारा फिरता है तथा उसका मस्तिष्क अस्थिर हो जाता है। मित्रों में परस्पर विरोध उत्पन्न कर उनके मध्य द्वन्द्वकरा देना, क्लेश उत्पन्न कर परस्पर शत्रु बना देना 'विद्वेषण' कर्म के अंतर्गत आता है। जबकि किसी जीव के प्राण का हरण कर उसकी जीवन-लीला समाप्त कर देने वाला कर्म– 'मारण' कर्म कहलाता है।

(इसी ग्रन्थ से)

आस्था प्रकाशन मन्दिर
बागपत
Mob. 09410030994, 9540674788
Email. : asthaprakashanmandir@gmail.com
www.asthaprakashan.com

ISBN : 978-93-82171-66-9

It is a preview of the book shatkarm vidhan. If you want to buy this book please deposit Rs 280+100 (courier)= Rs 380/= in below a/c –

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298 (Saving A/C)
IFSC Code – UTIB0001094
And send the receipt to our email sumitgirdharwal@yahoo.com

Our other books –

1. Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi

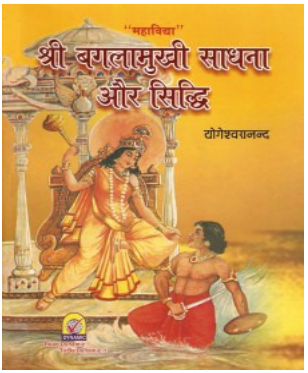

2. Mantra Sadhana

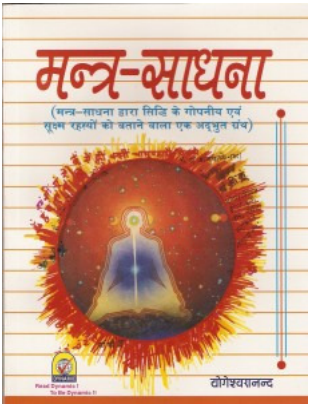

3. Shodashi Mahavidya (Tripurasundari Sadhana Sri Yantra Pooja)